डॉ. राम दास चौधरी
भारत की माटी से जुड़े मूर्धन्य वैज्ञानिक
Dr Ram Das Choudhary
Eminent Scientist Connected to Grassroot of India

(जन्म 8 अगस्त 1927 – मृत्यु 20 जून 2015)
(8 August, 1928- 20 June, 2015)

जवीन वृत्त

डॉ. रामदास चौधरी का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के फूलपुर गांव में 8 अगस्त 1927 को हुआ। आगरा विश्वविद्यालय से अध्ययन करने के बाद वे भोपाल के मोतीलाल साइंस महाविद्यालय में छह साल तक भौतिकी के व्याख्याता रहे। बैंकुअर, कैनाडा के यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलम्बिया सें उन्होंने भौतिकी में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। रॉयल मिलिटरी कॉलेज ऑफ कनाडा, किंग्स्टन से सन् 1966 में उन्होंने पोस्ट डॉक्टरल शोध पूरा किया और उसके बाद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क (SUNY) ऑस्वेगो में अध्यापान किया। यहाँ वे सन् 1998 तक विशिष्ट भौतिकी प्राध्यापक के रूप में काम करने के बाद सेवानिवृत्त होने के बाद भी प्रोफेसर एमिरेटस की हैसियत से बने रहे।

कई शोध-पत्र प्रकाशित किए। भौतिक विज्ञान की गहराई और नावोन्वेष में मग्न रहे। 18 विभिन्न कोर्स पढ़ाए, पाठ्यक्रम में मेडिकल भौतिकी और जीव विज्ञान भौतिकी जैसे नए कोर्स शामिल कराए।

डॉ. चौधरी साहब रोजाना सुबह 7 बजे अपने आफिस में आ जाते थे तथा करीब 5 बजे अपराह्न तक लगातार कार्य ही में लगे रहते थे। उनकी यह दिनचर्या रिटारमेंट के करीब 15 साल बाद तक भी बरकरार रही। वह हमेशा भौतिकी विभाग में सुबह सबसे पहले पहुंचते थे।

महात्मा गांधी से अनुप्रेरित

डॉ. चौधरी जब नवीं क्लास में थे तब उन्होंने महात्मा गांधी का जीवन चरित पढ़ा। इस पुस्तक से उन्होंने जाना कि जनसेवा एक धार्मिक कार्य है। महात्मा गांधी परेशानियों के बावजूद समाज कार्य में ही लगे रहते थे। नवयुवक रामदास चौधरी ने नवीं क्लास में निर्णय किया कि वह सादा जीवन जीकर समाज सेवा तथा धर्म सेवा में अपना जीवन गुजारेंगे। उन्होंने अपने शेष जीवन में कुछ ऐसा ही किया। एक अध्यापक के तौर से, एक भारतीय के तौर से, एक हिंदू के तौर से तथा विभिन्न संस्थाओं के अगुआ के तौर से वे यह सबक कभी नहीं भूले और सारा जीवन जनसेवा में ही गुजारे।

उन्होंने अपने जीवन में महात्मा गांधी की सभी प्रवृत्तियों को आत्मसात कर लिया था। सादा जीवन उच्च विचार उनका मूल मंत्र था। वह सब तरह के आडम्बर से दूर एक सरल सज्जन पुरुष का जीवन निर्वाह करना चाहते थे। वे एक मेधावी वैज्ञानिक, वरिष्ठ प्रोफेसर और लोकप्रिय व्याख्याता तो थे ही, वह अपने असाधारण व्यक्तितव के कारण उत्तरी न्यूयार्क क्षेत्र के भारतीय मूल के समाज के सभी परिवारों के अग्रज के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। प्रवासी भारतीय समाज को जोड़ने के लिए उन्होंने इस क्षेत्र के इंडिया कम्युनिटी रिलीजियस एंड कल्चरल सेंटर का नेतृत्व किया।

सामाजिक कार्य

डॉ. चौधरी भारत की सामाजिक एवं शैक्षिक गतिविधियों में निरंतर संलग्न रहते थे और भारत के गांवों की अशिक्षा को दूर करने के लिए प्रयासरत भी थे। उन्होंने उत्तर प्रदेश स्थित अपने जन्मस्थान गांव फूलपुर में बच्चों और वयस्कों की शिक्षा के लिए एक 'किसान विद्यालय' और 'ग्रामीण विज्ञान केंद्र' की स्थापना की जो उनके अथाह परिश्रम और अतुल्य आर्थिक योगदान से कुछ समय उपरांत किसान हाईस्कूल बना और फिर किसान इंटर कॉलेज बना जिसमें अब 500 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। उन्होंने व्यक्तिगत स्तर पर एक लाख डॉलर की राशि तथा अपनी पैतृक सम्पत्ति का बड़ा अंश दातव्य हस्पताल एवं शैक्षणिक संस्थान कायम करने के लिए दान किया ताकि वयस्क शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जन-स्वास्थ्य कार्यक्रमों के क्षेत्रों में पहुँच का विस्तार किया जा सके।

1968 में डॉ. चौधरी ने अपने पैसों से किसान मिडिल स्कूल खोला। 1995 में यह स्कूल हाईस्कूल में परिवर्तित हो गया तथा 2004 में यह इंटर कॉलेज बन गया। डॉ. चौधरी के प्रयत्नों से आज स्कूल के छात्र आधुनिक कम्प्यूटर तथा विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल करते हैं। गांव के लड़के-लड़कियों को अब पढ़ने के लिये दूर शहर में नहीं जाना पड़ता है। आजकल इस स्कूल में 12 अध्यापक तथा 450 छात्र हैं।

सेठ फाउण्डेशन की सहायता से एक छोटी सी डिस्पेन्सरी भी स्थापित करवाई।

भारतीय भाषा एवं संस्कृति के प्रवासी नायक

वे हिंदी के प्रति समर्पित एक ऐसे मनीषी थे जिन्होंने प्रवासी भारतीयों की कई पीढ़ियों को हिंदी से जुड़ने के लिए अनुप्रेरित किया है। उन्होंने इंटरनेशनल हिंदी एसोसिएशन, वर्ल्ड हिंदी फाउण्डेशन तथा इंडिया कम्यूनिटी रिलिजियस एंड कल्चरल सेंटर न्यूयार्क के नेतृत्व में सक्रिय भूमिका निभाई।

''हिंदी जगत'', ''बाल हिंदी जगत'' और ''विज्ञान प्रकाश'' आदि पत्रिकाएं प्रकाशित कर हिंदी की मशाल जलाए रखी। ये पत्रिकाएं अमेरिका में तो हिंदी भाषियों के बीच सेतु का काम करती ही थीं, साथ ही विश्वभर में फैले हिंदी प्रेमियों के लिए भी सम्बल थी।

वे अक्सर कहा करते थे कि डेढ़-दो सौ साल पहले मॉरिशस, फिजी, ट्रिनिडाड पहुंचे गिरिमिटिया मजदूरों से हमें सबक लेना चाहिए, जिन्होंने तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी भाषा और संस्कृति को बचा कर रखा।

वे हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनवाने के लिए निरंतर सक्रिय रहे। वे इस बात पर दुखी थे कि अमेरिकी शिक्षण संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई बहुत कम होती है जबकि हिंदी से कमजोर भाषाओं की पढ़ाई बेहतर तरीके से हो रही है। विश्व हिंदी न्यास के प्रयासों से रटगर्स विश्वविद्यालय में सन् 2001 में आरंभिक हिंदी कक्षाएं शुरू हो पायीं, इसके लिए न्यास को 8000 डॉलर का अनुदान विश्वविद्यालय को देना पड़ा। उसके बाद 10,000 डॉलर देकर माध्यमिक स्तर की कक्षाएं शुरू की गयी।

एक पीठ के लिए तब तीस लाख डॉलर विश्वविद्यालय को देने होते थे। वर्ष 2008 में उन्होंने लिखा था कि अमेरिका में हिंदी का कोई पीठ नहीं है। जबकि कोरियाई भाषा के 27 पीठ हैं। अमेरिका के पांच राज्यों में, जहां हिन्दुस्तानियों की संख्या अच्छी-खासी है, वहाँ हिंदी पीठ बनने चाहिए। इसमें भारत सरकार के भारतवंशी समान भागीदारी करें। दुर्भाग्य से बाद के वर्षों में उनकी सेहत कमजोर होने लगी और अमेरिका के धन कुबेर भी आगे नहीं आये। वे इस बात के लिए चिंतित रहते थे कि भारतीय धन कुबेर धार्मिक कार्यों के लिए तो जी भर के धन देते हैं लेकिन हिंदी के लिए नहीं देते। वे चीनियों का उदाहरण देते थे कि किस तरह से वह अपनी भाषा-संस्कृति को दुनिया भर में स्थापित करने की जुगत में लगे रहते हैं।

प्रो. राम दास चौधरी से मिलने आई उनकी शिष्या

यह बार-बार कहते थे कि भारत के उज्ज्वल भविष्य का

सूर्योदय तभी हो सकता है जब भारत में एक भारतीय भाषा सामान्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होगी। जब तक अंग्रेजी भाषा भारत की सरताज बनी रहेगी भारत का सम्यक विकास नहीं हो सकता। वैज्ञानिक होने के नाते उन्होंने कितने आंकड़े संकलित किये भारतीय जन समुदाय को यह समझाने के लिए कि चीन की प्रगति चीनी भाषा के उपयोग से हुई, अंग्रेजी से नहीं; जापान की प्रगति जापानी भाषा के उपयोग से हुई, अंग्रेजी से नहीं; इज़राइल की प्रगति हिब्रू भाषा के उपयोग से हुई, अंग्रेजी से नहीं; रूस की प्रगति रूसी भाषा के प्रयोग से हुई, अंग्रेजी से नहीं; फ्रांस की प्रगति फ्रेंच भाषा के उपयोग से हुई, अंग्रेजी से नहीं। भारत जैसे विशाल देश में जिसकी जनसंख्या एक अरब के ऊपर है, कैसे एक विदेशी भाषा गांव-गांव तक पहुंचाई जा सकती है, यह असंभव है। इसलिए पुनः महात्मा गांधी के विचारों को अनुसरण करते हुए उन्होंने अपना जीवन हिंदी के विकास के लिए समर्पण कर दिया।

अथाह परिश्रम करके उन्होंने 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति' का नेतृत्व किया, उसकी त्रैमासिक मुख पत्रिका 'विश्वा' के संपादन का भार उठाया। फिर हिंदी को और व्यापक मंच देने के लिए उन्होंने 'विश्व हिंदी न्यास' की स्थापना की और उनकी त्रैमासिक मुख पत्रिका 'हिंदी जगत' के संपादन का भार उठाया। साथ ही हिंदी प्रेमी वैज्ञानिक होने के नाते उन्होंने हिंदी में एक वैज्ञानिक पत्रिका 'विज्ञान प्रकाश' के संपादन और प्रकाशन का भी शुभारम्भ किया और जीवन पर्यन्त इस प्रयास में कटिबद्ध होकर डटे रहे।

अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए उच्च वर्ग के लोग अपनी भारतीय भाषा और संस्कृति को हीनता की दृष्टि से देखते हैं। इसका निवारण करने के लिए उन्होंने स्वयं एक पुस्तक 'भारतीय अस्मिता के अग्रदूत' की रचना की जिसमें भारत के महापुरुषों (महात्मा गांधी, तिलक, गोखले, राजा राम मोहन राय, डॉ. जगदीश चन्द्र बोस, महर्षि दयानंद, शंकराचार्य आदि) की जीवनी के बारे में ऐसा उल्लेख किया जिससे नवयुवकों को अपनी भारतीय संस्कृति में श्रद्धा एवं गर्व की भावना उत्पन्न हो। यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि इसका अनुवाद गुजराती और मराठी में भी संपन्न हो चुका है।

उनका दृढ़ विश्वास था कि हिंदी में विज्ञान की उच्च शिक्षा संभव है एवं ऐसा करने से ही हम भारत को एक अग्रगण्य राष्ट्र बना पायेंगे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'विज्ञान का क्रमिक विकास : वैश्विक परिप्रेक्ष्य में' (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित) के समर्पण में लिखा : 'भविष्य के जाने-अनजाने उन व्यक्तियों को जो हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा अनुसंधान का माध्यम बनाकर भारत को एक अग्रगण्य राष्ट्र बनाएंगे।'

प्रोफेसर चौधरी उन सभी को जोड़ना चाहते थे जो हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन तथा प्रसार से जुड़े हैं ताकि प्रयास को एक आंदोलन का रूप दिया जाए। इसको नई ऊर्जा प्रदान की जा सके, इस पर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हो सके एवं साथ ही साथ हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से विज्ञान साहित्य सृजन का काम चलता रहे।

प्रोफेसर चौधरी विश्व हिंदी न्यास, न्यूयार्क के प्राण थे एवं इसके तहत कई तरह के कार्यक्रम आयोजित करते रहे और उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं एवं पुस्तकें प्रकाशित की। इस संदर्भ में मैं दो पुस्तकों का उल्लेख करना चाहूँगा : 'हिंदी में विज्ञान-भावना' एवं 'लोक-विज्ञान तथा साहित्य साधना' (संपादक - डॉ. राम अवधेश कुमार श्रीवास्तव) यह दोनों पुस्तकें हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विज्ञान शिक्षा के महत्व को समझने के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होंगी।

'हिंदी में विज्ञान-भावना' जैसी पुस्तक की उपयोगिता के बारे में पुस्तक के पिछले आवरण पर उन्होंने लिखा- 'हिंदी में विज्ञान-भावना जैसे दस्तावेज के माध्यम से

भारतीय भाषाओं की अस्मिता, विज्ञान लोकप्रियकरण तथा भारतीय जनमानस की खुशहाली से सरोकार रखने वालों की अकुलाहट में जिये उन प्राणों को पुन: आगे लाने तथा उन पर नए सिरे से बहस करने का एक आधार मिल सकेगा, जिन्हें उत्तर न मिल पाने की वजह से पीछे जोड़ा जा रहा है।

विश्व हिंदी न्यास से ''न्यास समाचार'', ''बाल हिंदी जगत'', ''हिंदी जगत'' और ''विज्ञान प्रकाश'' प्रकाशित की गई। इस कार्य के लिए प्रवासी भारतीयों को जोड़ा और भारत में कई मित्रों को। विज्ञान प्रकाश को स्वयं संभालते थे। इस पर आए व्यय को स्वयं वहन करते थे, न्यास से नहीं। हिंदी में आधुनिक विज्ञान की उपलब्धता के प्रति आशावान थे, संकल्पित थे।

प्रो. रामदास चौधरी के निधन के बाद ''विज्ञान प्रकाश'' को लोक विज्ञान परिषद (पंजीयन संख्या स-14812) के माध्यम से प्रकाशित करने का प्रयास कर रहा है।

सम्मान

उनके प्रयासों को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है और उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जून 2003 में सूरीनाम में सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में अपने 'हिंदी भाषा और साहित्य के हितों के लिए बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें विश्व हिंदी कन्वेंशन सम्मान प्रदान किया गया। अगस्त 2013 में उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उनके आजीवन प्रतिबद्धता के साथ सेवा करने के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

स्वाभिमान

अमेरिका में रहकर भारतीय मानस को झकझोरा, विस्मृति से उबारा। विश्व हिंदी न्यास, इन्टरनेशनल हिंदी एसोशिएन और इंडिया रिलीजियस एण्ड कल्चरल सेंटर, न्यूयार्क में सक्रिय भूमिका निभाते रहे।

राम चौधरी किसान विद्यालय में

विदेशों में लगातार छह दशक के प्रवास के बावजूद उन्होंने भारत की नागरिकता नहीं छोड़ी।

श्रद्धांजलि

डॉ. चौधरी से मेरा पहला परिचय संभवत: 1989 में हुआ। तब वे इंटरनेशनल हिंदी एसोसिएशन से जुड़े थे और ''विश्वा'' के सम्पादक का कार्य संभाले थे।

विज्ञान-शिक्षण, ग्रामीण विकास और हिंदी प्रचार-प्रसार में उनके कार्य अतुलनीय हैं। उनके अनुप्रेरक योगदान को विश्व भर में सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

प्रो. भूदेव शर्मा

(bhudev_shrama@yahoo.com

मैं प्रोफेसर चौधरी की हिंदी, विज्ञान और शिक्षा के प्रति निष्ठा व समर्पण से अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। उनके निधन से विश्व ने एक प्रमुख हिंदी सेवक खो दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन्होंने हिंदी का जो पौधा अमेरिका में लगाया है, उनके साथी उसे सींचते रहेंगे और भविष्य में वह एक बड़ा पेड़ बन कर सम्पूर्ण विश्व को मीठे फल देगा।

डॉ. दिनेश श्रीवास्तव

(dsrivastava@optunet.com.in)

डॉ. चौधरी के जाने का तो दु:ख है ही, लेकिन इससे भी दु:खद यह है कि हिंदी मीडिया में इसकी सूचना तक नहीं दिखी।

उन्होंने अमेरिका में हिंदी के विकास हेतु पहले अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति और बाद में विश्व हिंदी न्यास गठित कर संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को पहुँचाने की भरसक कोशिशें की। जो लोग कहते थे कि विज्ञान को हिंदी में नहीं पढ़ाया जा सकता, उन्होंने हिंदी में विज्ञान की पुस्तकें लिखकर करारा जवाब दिया।

''विज्ञान प्रकाश'' का प्रकाशन इसलिए किया गया था। वे चाहते थे कि विज्ञान प्रकाश बंद नहीं होना चाहिए, इससे भारत में विज्ञान-शिक्षण हिंदी में करने में मदद मिलेगी।

देश के भीतर और बाहर दोनों जगह हिंदी को उसका जायज हक मिलना चाहिए। हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए चहुँमुखी प्रयास करने होंगे। देश से बाहर बसे ढ़ाई

करोड़ भारतवंशियों को जोड़ने का इससे बेहतर और कोई उपाय नहीं हो सकता।

प्रो. गोविन्द सिंह
(govindsingh@uov.ac.in)

मेरा उनका संग-साथ करीब तीन दशक का रहा। उनका भौतिकी में अध्यापन तथा शोध कार्य तथा हिंदू धर्म, हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति और भारत से लगाव मेरे लिये हमेशा एक प्रेरणास्रोत रहा है। उनके निधन की खबर जानकर दिल और दिमाग को बेहद दु:ख हुआ।

चौधरी साहब विशुद्ध शाकाहारी थे, अत: वह ज्यादातर घर पर ही भोजन करना पसंद करते थे। चौधरी साहब अपने स्वास्थ्य का काफी ध्यान रखते थे। वह रोजाना पैदल घूमने जाते थे और उनका टैनिस खेलने का काफी शौक था। मैंने उनके साथ अनेक बार टैनिस खेला मगर बुरी तरह से हारने की वजह से खेलना बंद किया।

डॉ. रामदास चौधरी अमेरिका में रहने के बावजूद हिंदी भाषा, हिंदू धर्म, भारत एवं भारतीय संस्कृति के बेहद करीब थे और वे जीवनपर्यन्त अपनी मातृभाषा एवं मातृभूमि को कभी नहीं भूले।

उनका स्कूल, चिकित्सालय, पुस्तकं तथा अन्य साहितय उनकी यादगार की महत्वपूर्ण निशानियां हैं जो कि आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

डॉ. आलोक कुमार
(alok.kumar@osweco.edu

डॉ. रामदास चौधरी जी से हमारा पारवारिक सम्बंध सदियों पुराना है। वे भूलपुर गांव के चौधरी परिवार से थे और हम केवल एक मील दूर ददोरा गांव के चौधरी परिवार से हैं।

हमारा साक्षात्कार तो बड़े चौधरी जी से जून 1970 में ही हुआ जब मैं अमेरिका से पीएचडी करके वापस भारत आया और अपने गांव में कुछ समय बिताया तो पता लगा कि रामदास जी भी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में इटावा आये हुए हैं।

चौधरी परिवार के हम सब सदस्यों पर और जो कोई भी उनके निकट संपर्क में आया, उन सब के जीवन में हमारे बड़े चौधरी जी के अद्भुत चरित्र की अविस्मरणीय छवि सदा जाग्रत रहेगी और हम सब को प्रोत्साहित करती रहेगी, उनके बताये मार्ग का अनुसरण करने के लिए।

डॉ. वेद प्रकाश चौधरी
(ved.chaudhary@gmail.com)

भौतिकी में विदेशी विश्वविद्यालय में शोध तथा शिक्षण में व्यस्त रहेने के बावजूद जीवन के अंत तक वे हिंदी में विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य करते रहे। मैं इसी संदर्भ में उनसे जुड़ा। उनमें मैंने दिल्ली में दो बार मुलाकात की तथा हमारी कई बार टेलीफोन से चर्चा हुई। उन्हीं के आग्रह पर मैं विश्व हिंदी न्यास, न्यूयार्क से प्रकाशित पत्रिका 'विज्ञान प्रकाश' से सम्पादक मंडल के सदस्य के रूप में जुड़ा

आज प्रोफेसर चौधरी हमारे बीच नहीं रहे, मगर उनके दिखाये रास्ते में आगे चलने की न केवल जरूरत है, बल्कि हमारा अहम कर्तव्य होना चाहिए। अंग्रेजी का मोह छोड़कर हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में विज्ञान शिक्षा के आधार को मजबूती प्रदान करना होगा तभी भारत एक अग्रगण्य राष्ट्र बन पायेगा। यह केवल हिंदी दिवस तथा विश्व हिंदी सम्मेलन करके संभव नहीं होगा। इसके लिये ठोस काम करना होगा, जैसे कि प्रोफेसर चौधरी कर रहे थे।

डॉ. सुबोध महन्ती
(subodhmahanti@gmail.com)

आठ दशक आयु के बाद थके महसूस करने लगे, लेकिन चिंतित थे ''विज्ञान प्रकाश'' के सातत्य के प्रति। चार साल पहले आईआईटी दिल्ली के गेस्ट हाउस में ठहरे थे, वहां मुझे बुलाया और ''विज्ञान प्रकाश'' (ISSN:1549-523-X) के संपादन और प्रकाशन के लिए मेरा सहयोग मांगा, मेरे लिए उनका मार्गदर्शन मिलना सौभाग्य था। उनकी अस्वस्थता को ध्यान में रखकर ''विज्ञान प्रकाश'' के स्थानीय संपादन के लिए मैंने सहमति दे दी।

प्रो. रामदास चौधरी के निधन के बाद ''विज्ञान प्रकाश'' को लोक विज्ञान परिषद (पंजीयन संख्या सं-14812) के माध्यम से प्रकाशित करने का प्रयास होगा। उनके संकल्पित स्वप्न को साकार करने का प्रयास करते रहेंगे।

संवेदनशील मूर्धन्य वैज्ञानिक थे, और अपनी भाषा, संस्कृति एवं समाज के उन्नयन के प्रति समर्पित थे डॉ. रामदास चौधरी।

20 जून 2015 को 87 वर्ष पूरे कर हमें छोड़ गए मूक संदेश के साथ- 'निज भाषा उन्नत अहै सब उन्नति को मूल।'

❑ **डॉ. ओम विकास**
(dr.omvikas@gmail.com)